अध्याय 1

भारत का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण

आओ सीखें

पिछली कक्षा में हम राष्ट्रीय भक्ति आंदोलन का अध्ययन कर चुके हैं, जिसमें हमने जाना कि किस तरह से भक्त-संतों ने भारतीय समाज में आई कुरीतियों को दूर कर भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा की। प्रस्तुत अध्याय में हम भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अध्ययन करते हुए यह जानने का प्रयत्न करेंगे कि भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण में किन संगठनों, संस्थाओं, आंदोलनों एवं महापुरुषों की भूमिका रही।

- राजा राममोहन राय एवं ब्रह्म समाज।
- प्रार्थना समाज।
- स्वामी दयानंद एवं आर्य समाज।
- स्वामी विवेकानंद एवं रामकृष्ण मिशन।
- सांस्कृतिक राष्ट्रीयता तथा महर्षि अरविंद एवं डॉ. हेडगेवार।
- जाति प्रथा विरोध तथा अछूतोद्धार आंदोलन

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक आंदोलनों का उदय एवं विकास हुआ। इन आंदोलनों की उत्पत्ति भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार के साथ औपनिवेशिक संस्कृति, विचारधारा तथा ईसाई मत के प्रचार-प्रसार की प्रतिक्रियास्वरूप हुई। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में भारतीय समाज सती प्रथा, मूर्ति पूजा, विधवा का कठोर जीवन, कर्मकाण्डों, अंधविश्वासों, अशिक्षा, असमानता, छुआछूत, जाति प्रथा जैसी बुराइयों से जूझ रहा था। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी का सहयोग पाकर ईसाई मत प्रचारकों ने इसका लाभ उठाने का प्रयास किया तथा जोर-शोर से ईसाइयत का प्रचार आरंभ कर दिया, जिसकी प्रतिक्रियास्वरूप राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद, ज्योतिबा फुले, महादेव गोविंद रानाडे जैसे महान समाज सुधारकों ने ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, सत्यशोधक समाज, रामकृष्ण मिशन इत्यादि आंदोलन चलाए। उन्होंने इन आंदोलनों के माध्यम से उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय समाज में सुधार के लिए आवाज उठाई। उन्होंने समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर कर आत्मविश्वास को जागृत करके भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण में मुख्य भूमिका निभाई। इसी आवाज को बीसवीं शताब्दी में महर्षि अरविंद, डॉ. हेडगेवार ने सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के माध्यम से तथा नारायण गुरू एवं डॉ. अम्बेडकर ने वंचित जातियों के उद्धार आंदोलनों द्वारा तीव्र धार देकर समाज को समरसता, एकता, राष्ट्रीयता एवं समानता के पथ पर अग्रसर किया। ये आंदोलन केवल धार्मिक ही नहीं थे अपितु इनकी प्रवृत्ति सामाजिक भी थी

© Shiwani Not to be Republished

तथा इनकी अंत: प्रेरणा में मानवता भी थी। इन आंदोलनों ने भारत रूपी प्राचीन सांस्कृतिक राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बौद्धिक जागरण में मुख्य योगदान दिया। इन आंदोलनों से जुड़े महापुरुषों के विचारों, कार्यों एवं सुधारों से भारत दासता की आत्महीनता को त्यागकर पुन: आत्मसम्मान एवं स्वाभिमान की अंगड़ाई लेकर उठ खड़ा हुआ। ये आंदोलन भारत में आधुनिकता, राष्ट्रीयता, समरसता एवं जन जागरण के पोषक थे।

1. राजा राममोहन राय एवं ब्रह्म समाज

राजा राममोहन राय ने 20 अगस्त, 1828 ई. को अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए 'ब्रह्म समाज' की स्थापना की। ब्रह्म समाज के विचारों ने आधुनिक भारतीय समाज में एक क्रांति पैदा की। राजा राममोहन राय को आधुनिक भारतीय राजनीतिक और सामाजिक सुधार का 'अग्रदूत' कहा जाता है। उन्होंने भारतीय समाज को अंधविश्वास तथा रूढ़िवादिता से मुक्त करवाने का कार्य किया। उनके विचार अपने युग के संदर्भ में प्रगतिशील ही नहीं अपितु क्रांतिकारी भी थे। राजा राममोहन राय एवं उनके ब्रह्म समाज आंदोलन के योगदान का विवरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है :

क) सती प्रथा का उन्मूलन : समाज में फैली सती प्रथा जैसी कुप्रथा का विरोध करने वाले प्रथम भारतीय, राजा राममोहन राय थे। उन्होंने कहा कि 'किसी भी शास्त्र के अनुसार यह हत्या ही है।' उनका मानना था कि सती प्रथा या सहमरण का उल्लेख किसी भी शास्त्र में नहीं है। उन्होंने सती प्रथा का इतना उग्र विरोध किया कि लॉर्ड विलियम बैंटिक को एक आज्ञा पत्र जारी कर 1829 ई. में सती प्रथा पर रोक लगाकर 'सती प्रथा निषेध कानून' को पूरे भारत में लागू करना पड़ा।

सती प्रथा : कुछ उच्चवर्गीय भारतीय समुदायों में प्रचलित एक ऐसी कुप्रथा जिसमें पत्नी अपने पति की मृत्यु के बाद उसकी चिता में जलकर स्वयं को समाप्त कर लेती थी।

ख) नारी की दशा में सुधार : राजा राममोहन राय आधुनिक भारत में 'नारी की स्वतंत्रता के अग्रदूत' माने जा सकते हैं। उस समय स्त्रियों की व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों ही स्थितियाँ दयनीय थी। उन्होंने नारी पर किए जाने वाले अन्याय और अत्याचार का विरोध किया एवं नारी स्वतंत्रता, नारी अधिकार और नारी शिक्षा पर बल दिया। राजा राममोहन राय चाहते थे कि बाल विधवाएं पुनर्विवाह करें एवं प्रौढ़ विधवाएं भी समाज में सिर उठाकर जी सकें, इसके लिए उन्हें शिक्षित किया जाए। उन्होंने स्त्री-पुरुष के अधिकारों में समानता पर बल दिया।

ग) जातिप्रथा का विरोध : राजा राममोहन राय का मानना था कि जाति प्रथा समाज को संकीर्ण ही नहीं बनाती बल्कि सामाजिक असमानता को भी बढ़ावा देती है। इस कारण उन्होंने जाति प्रथा का विरोध किया और इसे समाज के लिए कलंक माना।

©BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

घ) समाचार पत्रों का प्रकाशन : राजा राममोहन राय पहले भारतीय थे, जिन्होंने समाचार पत्रों की स्थापना, संपादन तथा प्रकाशन का कार्य भी किया। उन्होंने अंग्रेजी, बांग्ला तथा उर्दू में समाचार पत्र प्रकाशित किए। उन्हें 'पत्रकारिता का जनक' भी कहा जाता है। प्रैस की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने कठिन संघर्ष किया। उन्होंने 'ब्राह्मनिकल मैगज़ीन', 'संवाद कौमुदी', 'मीरात-उल-अखबार', 'बंगदूत' जैसे समाचार पत्रों का संपादन-प्रकाशन किया।

गतिविधि : राजा राममोहन राय द्वारा प्रकाशित समाचार पत्रों की विषय वस्तु को जानने का प्रयत्न करें।

ड.) व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा अधिकारों के प्रबल समर्थक : राजा राममोहन राय व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा अधिकारों के प्रबल समर्थक थे। वे मानते थे कि राज्य को निर्बल तथा असहाय व्यक्तियों की रक्षा करनी चाहिए और यह उसका कर्तव्य भी है कि जनता की सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और राजनीतिक दशाओं में सुधार हों।

च) अंग्रेजी शिक्षा पर बल : राजा राममोहन राय भारतीयों के लिए अंग्रेजी शिक्षा के समर्थक थे उन्होंने अंग्रेजी सरकार को बार-बार पत्र लिखकर अंग्रेजी शिक्षा तथा अंग्रेजी शिक्षण संस्थाओं की स्थापना का आग्रह किया।

छ) मानवता एवं विश्व बंधुत्व : राजा राममोहन राय का व्यक्तित्व पूर्णतया मानवतावादी था। वे विश्व बंधुत्व के उपासक थे और मत-मतान्तरों से ऊपर उठकर मानव धर्म के चिंतक भी थे। उनकी मान्यता थी कि सभी देशों के समाजों के बीच पारस्परिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करना चाहिए।

यद्यपि राजा राममोहन राय व उनके ब्रह्म समाज का प्रभाव मुख्यत: पढ़े-लिखे शहरी उच्च वर्ग तक ही सीमित था लेकिन इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि लगभग 50 वर्ष ब्रह्म समाज ने राष्ट्र को जागृत किया तथा भारतीयों को ईसाई बनने से रोका।

2. प्रार्थना समाज

महाराष्ट्र में स माज सुधार आंदोलन 1840 ई. के पश्चात आरंभ हुए। सबसे पहले यहां परमहंस मंडली की स्थापना हुई, जिसने मूर्ति पूजा और जाति प्रथा का विरोध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया। पश्चिमी भारत के सबसे पहले समाज सुधारक गोपाल हरि देशमुख थे, जिन्हें 'लोकहितवादी' भी कहा जाता है। उन्होंने अंधविश्वासों का विरोध किया तथा सामाजिक समानता का समर्थन किया। 1867 ई. में ब्रह्म समाज से प्रभावित होकर आत्माराम पांडुरंग ने 'प्रार्थना समाज' की स्थापना की। शीघ्र ही सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान आर.जी.भंडारकर

©BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

तथा महादेव गोविंद रानाडे भी प्रार्थना समाज से जुड़ गए। प्रार्थना समाज का उद्देश्य अछूतों, वंचितों तथा पीड़ितों की दशा में सुधार करना तथा जाति-व्यवस्था एवं रूढ़िवाद का विरोध करना था। प्रार्थना समाज ने अंतर्जातीय विवाह, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा आदि का समर्थन किया। रानाडे ने महाराष्ट्र में 'विधवा पुनर्विवाह संघ' की स्थापना करके विधवा विवाह के लिए जोरदार आवाज उठाई। उन्हीं के प्रयत्नों से 'दक्कन एजुकेशनल सोसायटी' की स्थापना हुई तथा उनके शिष्य गोपाल कृष्ण गोखले ने 'सर्वेन्टस ऑफ इंडिया सोसायटी' की स्थापना की। प्रार्थना समाज का भारतीय पुनर्जागरण के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।

चित्र-1. महादेव गोविंद रानाडे

3. स्वामी दयानंद एवं आर्य समाज

आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 ई. में मुंबई में अपने गुरु विरजानंद की प्रेरणा से की। उन्होंने अपने गुरु से शिक्षा प्राप्त कर समाज सुधार हेतु कार्य प्रारंभ किया। उन्होंने अंधविश्वासों व कर्मकांडों का विरोध किया तथा हरिद्वार में 'पाखण्ड खण्डिनी पताका' फहराकर मिथ्याडंबर व कर्मकांड के समर्थकों को शास्त्रार्थ में हराया। वर्ष 1863 ई. से 1875 ई. तक उन्होंने देश का भ्रमण किया। वेदों का प्रचार करने के लिए उन्होंने पूरे देश का दौरा करके विद्वानों को वेदों के महत्व के बारे में समझाया। आर्य समाज एक 'समाज सुधार आंदोलन' था। यह आंदोलन पाश्चात्य प्रभावों की प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप समाज में सुधारों को प्रारंभ करने के लिए हुआ। आर्य समाज पूर्ण रूप से शुद्ध वैदिक परंपरा में विश्वास करता है एवं मूर्ति पूजा, अवतारवाद, बलि, कर्मकांड, धार्मिक आडंबर एवं अंधविश्वासों को अस्वीकार करता है। आर्य समाज ने छूआछूत व जातिगत भेदभाव का विरोध किया तथा स्त्रियों और शूद्रों को समानता एवं यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार वैदिक सिद्धांतों के आधार पर प्रदान करने का प्रयत्न किया। आर्य समाज द्वारा किये गये सुधारों का विवरण इस प्रकार है

चित्र-2. पाखण्ड खण्डिनी पताका

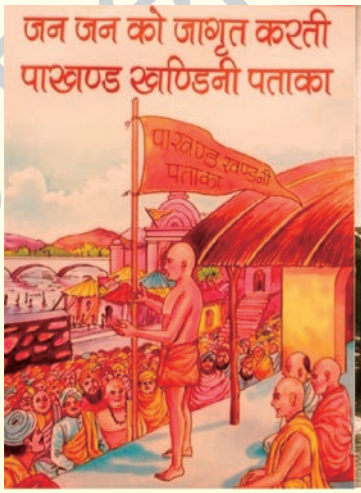

चित्र-3. स्वामी दयानंद सरस्वती

पाश्चात्य : पश्चिमी देशों (यूरोपियन) से संबंधित

क) राष्ट्रीय हित में तीन कार्य : स्वामी दयानंद ने देश में एकता स्थापित करने के लिए तीन कार्य करने की योजना बनाई। प्रथम, हरिद्वार कुंभ मेले में संन्यासियों के मध्य वेदों पर आधारित धार्मिक विचार रखें ताकि मतभेद दूर होकर एकता स्थापित हो सके। दूसरा, शास्त्रार्थ द्वारा सत्य और असत्य का निर्णय कर विद्वानों को संगठित करना ताकि सत्य को ग्रहण और असत्य का त्याग किया जा सके। उनका मानना था कि विद्वानों के संगठित होते ही राष्ट्र जीवित हो उठेगा। तीसरा, 1877 ई. में दिल्ली दरबार के समय समाज सुधारकों को आमंत्रित कर सर्वसम्मत कार्यक्रम बनाकर समाज सुधार किया जाए। परंतु समाज सुधारक कोई सर्वसम्मत कार्यक्रम नहीं बना सके।

क्या आप जानते हैं?
हरियाणा में आर्य समाज की स्थापना सबसे पहले रेवाड़ी में हुई थी तथा स्वामी दयानंद 1880 ई. में यहां आए थे।

ख) सत्यार्थ प्रकाश : आर्य समाज का मूल ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' है जिसकी रचना स्वामी दयानंद सरस्वती ने हिंदी में की, ताकि उनकी रचना का लाभ अधिकतम भारतवासियों तक पहुँच सके। स्वामी जी जब पूरे देश में घूम-घूम कर व्याख्यान दे रहे थे, तो उनके अनुयायियों ने उनसे शास्त्रों एवं व्याख्यानों को लिपिबद्ध करने का अनुरोध किया और इस प्रकार 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना हुई। इस ग्रंथ का प्रमुख उद्देश्य आर्य समाज के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करना था। उनके अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ 'ऋग्वेद भाष्य' तथा 'आर्याभिनव' थे।

ग) वेदों की ओर लौटो : देश में उस समय व्याप्त परिस्थितियों से दु:खी हो स्वामी दयानंद ने सामाजिक सुधार लाने हेतु अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने मूर्ति पूजा, पुरोहितवाद तथा कर्मकांडों का विरोध किया एवं 'वेदों की ओर लौटो' का नारा दिया। उन्होंने दावा किया कि केवल चारों वेद ही ज्ञान के वास्तविक भंडार हैं, समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं बुराइयों का भी विरोध किया।

पता लगाएं कि स्वामी दयानंद ने वेदों की ओर लौटने का आह्वान क्यों किया?

घ) शुद्धि आंदोलन : हिंदू धर्म की श्रेष्ठता पर बल देते हुए आर्य समाजियों ने 'शुद्धि आंदोलन' आरम्भ किया। जिसका मुख्य उद्देश्य था 'हिंदू धर्म से अन्य धर्मों में गए लोगों को वापस हिंदू धर्म में लाना।' यह आंदोलन प्रभावी रहा और इसी वजह से धर्मांतरण बंद हो गया। 'शुद्धि आंदोलन' ने धर्मांतरण करने वालों को कड़ी चुनौती दी थी।

क्या आप जानते हैं?
हिन्दू धर्म में वापसी के अधिकार की बात देवल स्मृति में की गई है। जो कि उस समय में लिखी गई थी, जब मुस्लिम हमलावर हिन्दुओं का जबरन धर्म परिवर्तन करवा रहे थे।

ड.) वर्ण भेद का विरोध : उन्होंने सदैव कहा कि शास्त्रों में वर्ण भेद शब्द नहीं बल्कि वर्ण व्यवस्था शब्द है, जिसके अनुसार चारों वर्ण केवल समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए हैं, जिसमें कोई छोटा-बड़ा नहीं बल्कि सभी समान हैं। उन्होंने सभी वर्गों को समान अधिकार देने की बात रखी और वर्ण भेद का विरोध किया। उन्होंने उपनिषदों से सत्यकाम जाबाल का उदाहरण देकर जन्म आधारित जाति व्यवस्था का विरोध किया ।

©BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

गतिविधि : छान्दोग्य उपनिषद में वर्णित सत्यकाम जाबाल की कहानी पर चर्चा करें।

च) स्त्री शिक्षा एवं समानता : वे सदैव स्त्री को पुरुष के समान मानते थे। उन्होंने वेदों के प्रमाण देकर स्त्री शिक्षा का समर्थन किया। उनका मानना था कि स्त्री शिक्षा से ही समाज का विकास हो सकता है। उन्होंने स्त्री को समाज का आधार माना। उनका कहना था कि सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में नारियों से विचार-विमर्श आवश्यक है, और जिसके लिए उनका शिक्षित होना आवश्यक है।

छ) बाल विवाह का विरोध : उस समय बाल विवाह की प्रथा सभी जगह व्याप्त थी। सभी उसका अनुसरण सहर्ष करते थे, तब स्वामी जी ने शास्त्रों के माध्यम से लोगों को इस प्रथा के विरुद्ध जगाया। उन्होंने स्पष्ट किया कि शास्त्रों में उल्लेखित है कि मनुष्य जीवन में पहले 25 वर्ष ब्रह्मचर्य के हैं। उनके अनुसार बाल विवाह एक कुप्रथा है। उन्होंने कहा कि अगर बाल विवाह होता है तो मनुष्य निर्बल बनता है और निर्बलता के कारण समय से पूर्व मृत्यु को प्राप्त होता है।

ज) विधवा पुनर्विवाह : स्वामी दयानंद से पूर्व ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह के लिए विशेष अभियान चलाया था जिसके परिणामस्वरूप 1856 ई. में 'विधवा पुनर्विवाह' को कानूनी मान्यता मिली। लेकिन इसके बावजूद भी समाज में विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय रही। विधवा स्त्रियों का स्तर देश में संघर्षपूर्ण था। विधवाओं का जीवन कठोर एवं नारकीय था। स्वामी दयानंद ने इस बात की बहुत निंदा की और उस काल में भी वेदों से साक्ष्य लेकर नारियों के सम्मानपूर्वक पुनर्विवाह के लिए अपना मत दिया और राष्ट्र को इस ओर जागरूक किया।

गतिविधि : विधवा पुनर्विवाह के लिए ईश्वरचंद्र विद्यासागर द्वारा किए गए प्रयासों पर एक लेख लिखिए।

झ) शिक्षा का प्रसार : स्वामी दयानंद का मानना था कि मानव विकास एवं प्रगति सुनिश्चित करने का सर्वोत्तम मार्ग, शिक्षा है। आर्य समाज ने इस क्षेत्र में विस्तृत कार्य किया। समाज ने इस तथ्य को आत्मसात् कर लिया था कि शिक्षा की जड़ें राष्ट्रीय भावना और परंपरा में गहरी होनी चाहिए। हम एक प्राचीन और श्रेष्ठ परंपरा के उत्तराधिकारी हैं। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल कांगडी और डी.ए.वी. (दयानंद एंगलो वैदिक) संस्थाएं स्थापित कर शिक्षा जगत में आर्य समाज ने अग्रणी भूमिका निभाई। नारी शिक्षा में भी आर्य समाज ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इस प्रकार स्वामी दयानंद एवं उनके आर्य समाज ने भारतीयों में राष्ट्रीयता, एकता एवं शिक्षा के विकास में मुख्य भूमिका निभाई। स्वामी दयानंद का कथन 'भारत भारतीयों के लिए है' तथा 'बुरे से बुरा स्वदेशी राज्य भी अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा होता है' से भारतीयों में विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष की भावना का जन्म हुआ। आर्य समाज ने भावी राष्ट्रीय आंदोलन के लिए कई क्रांतिकारी एवं राष्ट्रीय नेता दिए।

©BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

4. स्वामी विवेकानंद एवं रामकृष्ण मिशन

चित्र-4.
रामकृष्ण परमहंस

स्वामी विवेकानंद ने 1 मई, 1897 ई. को रामकृष्ण मिशन की स्थापना रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं और उनके उपदेशों को जनसाधारण तक पहुंचाने के लिए की। सर्वप्रथम स्वामी विवेकानंद ने बारानगर में मठ की स्थापना की उसके बाद बेलूर (कलकत्ता) में मिशन की स्थापना की गई। रामकृष्ण परमहंस द्वारा मानव हित में जिन तत्त्वों की व्याख्या की गई, उनका प्रचार करना इस मिशन का उद्देश्य था। मिशन के सिद्धांतों में वैज्ञानिक प्रगति तथा चिंतन के साथ, प्राचीन भारतीय आध्यात्मिकता का समन्वय किया गया। रामकृष्ण मिशन के सिद्धांतों का आधार वेदांत दर्शन है। मिशन के अनुसार ईश्वर साकार और निराकार दोनों है तथा उसकी अनुभूति विभिन्न प्रतीकों के रूप में की जा सकती है। सभी धर्म मौलिक रूप से एक हैं। इस मिशन ने न केवल भारतीयों की दशा सुधारने की दिशा में प्रयास किया अपितु भारत के वेदांत का संदेश भी पाश्चात्य देशों तक प्रसारित किया।

क) शिकागो धर्म संसद : स्वामी विवेकानंद 1893 ई. में शिकागो (अमेरिका) गए, जहां उन्होंने धर्म संसद में 11 सितंबर, 1893 ई. को भाषण दिया। यह वह भाषण था, जिसने पूरी दुनिया के सामने भारत को एक मजबूत छवि के साथ पेश किया।

चित्र-5. शिकागो धर्म संसद व स्वामी विवेकानन्द

आइए उनके भाषण की खास बातें जानें :

- भाषण की शुरुआत अमेरिकी भाइयों और बहनों के साथ की। उन्होंने सबसे पुरानी परंपरा, सभी धर्मों की जननी, सभी जातियों और संप्रदायों के लाखों करोड़ों हिंदुओं की ओर से अपना स्नेहपूर्वक स्वागत करने के लिए उनका आभार व्यक्त किया।
- उन वक्ताओं का भी धन्यवाद किया जिन्होंने स्पष्ट कहा कि दुनिया में सहिष्णुता का विचार पूर्व के देशों से फैला है।
- मैं उस धर्म से हूँ जिसने विश्व को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया और हम सिर्फ सार्वभौमिक सहिष्णुता पर ही विश्वास नहीं करते अपितु हम सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं।
- मैं उस देश से हूँ जिसने सभी धर्मों और सभी देशों के सताए गए लोगों को अपने यहाँ शरण दी।
- मैं ऐसे धर्म से हूँ जिसने यहूदी एवं पारसी धर्म के लोगों को शरण दी और लगातार अब भी उनकी मदद कर रहा है।

©BSEH, Bhiwani Not to be Republished

उन्होंने कहा कि 'जिस प्रकार अलग-अलग जगहों से निकली नदियाँ अलग-अलग रास्तों से होकर अंत में समुद्र में मिल जाती हैं, ठीक उसी तरह मनुष्य अपनी इच्छा से अलग रास्ते चुनते हैं, ये रास्ते देखने में भले ही अलग-अलग लगते हैं किन्तु ये सब ईश्वर तक ही जाते हैं।' इस प्रकार स्वामी विवेकानंद ने भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं दर्शन का सम्पूर्ण विश्व में प्रचार-प्रसार किया।

ख) सभी धर्मों में एकता : स्वामी विवेकानंद का मानना था कि सभी धर्मों में शाश्वत एकता है। भारत भ्रमण के दौरान उन्होंने विभिन्न धर्मों के मूल को समझा। धर्म की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा, 'धर्म हमेशा मनुष्य को सद्विचार एवं आत्मा से जोड़ता है। धर्म वह विचार एवं आचरण है, जो मनुष्य के अंदर की पशुता को इंसानियत में और इंसानियत को देवत्व में बदलने की क्षमता रखता है।' उन्होंने सभी धर्मों का सार सत्य को बताया। वे मनुष्य की सेवा को ही ईश्वर की सेवा मानते थे।

ग) शिक्षा पर बल : स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा मनुष्य की आंतरिक पूर्णता को प्रकट करती है। शिक्षा मानव में जन्म से ही विद्यमान शक्तियों का विकास करती है तथा यह बताती है, कि सभी प्रकार का ज्ञान मनुष्य की आत्मा में निहित रहता है। स्वामी विवेकानन्द सर्वहितकारी, सर्वव्यापी एवं मानव निर्माण करने वाली शिक्षा पर बल देते थे। स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की आंतरिक पूर्णता को प्रकट करना, शारीरिक पूर्णता, चरित्र का निर्माण करना, जीवन संघर्ष की तैयारी, राष्ट्रीयता की भावना का विकास, आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास पैदा करना होना चाहिए।

घ) स्त्री-पुरुष के भेदभाव का विरोध : स्वामी विवेकानंद ने कहा कि स्त्री एवं पुरुष का भेद प्राकृतिक नहीं है क्योंकि यह केवल शारीरिक भेद है जो ईश्वर द्वारा मान्य नहीं है। स्त्री और पुरुष में किए जाने वाले भेदभाव को समाप्त करना होगा एवं स्त्रियों को भी वही सम्मान एवं स्थान देना होगा जो पुरुषों को मिलता है। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार विश्व का कल्याण स्त्री कल्याण पर निर्भर करता है। जब तक समाज में स्त्रियों की स्थिति बेहतर नहीं होगी, विश्व कल्याण संभव नहीं है।

ड.) स्वामी विवेकानंद एवं युवा : स्वामी विवेकानंद का मानना था कि युवाओं में अनंत ऊर्जा होती है और अगर उनकी ऊर्जा को सही दिशा मिल जाए तो राष्ट्र के विकास को विस्तार मिल सकता है। उन्हें लक्ष्य देने की आवश्यकता है, क्योंकि लक्ष्य विहीन जीवन व्यर्थ है। उन्होंने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि ''उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको।'' स्वामी विवेकानंद ने युवा वर्ग को चरित्र निर्माण के पाँच सूत्र दिए- आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्मज्ञान, आत्मसंयम और आत्मत्याग। इन पाँच तत्त्वों के निरंतर अभ्यास से युवा अपना व देश और समाज का पुनर्निर्माण कर सकता है। जिसने निश्चय कर लिया उसके लिए केवल लक्ष्य प्राप्ति के लिए कदम उठाना शेष रह जाता है। उन्होंने युवाओं में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रति गौरव की भावना उत्पन्न करके उनको राष्ट्रहित के लिए प्रेरित किया।

च) विवेकानंद और राष्ट्रीयता : 'मैं भारतीय हूँ और प्रत्येक भारतीय मेरा भाई है, अबोध भारतीय, गरीब

©BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

एवं फक्कड़ भारतीय, ब्राह्मण भारतीय, अछूत भारतीय मेरा भाई है।' भारत का समाज मेरे बचपन का झूला, यौवन की फुलवारी और वृद्धावस्था की काशी है। भारत की धरती मेरा परम स्वर्ग है। भारत की अच्छाइयाँ मेरी अच्छाइयाँ हैं। ये सभी स्वामी विवेकानंद के उद्‌गार थे जो भारतीयों में एक राष्ट्र के तौर पर अपनी पहचान को जगाने में सहायक रहे हैं। स्वामी विवेकानंद राष्ट्रीयता, आध्यात्मिकता और नैतिकता से पूरी तरह ओत-प्रोत थे। उन्होंने अपने अल्प जीवन में उन्नत राष्ट्र और प्रगतिशील समाज की कल्पना की। औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रीयता को सही ढंग से उभारने में स्वामी विवेकानंद का महत्वपूर्ण योगदान रहा। युवाओं पर उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी। स्वामी विवेकानंद तथा रामकृष्ण मिशन ने भारतीयों में आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान की भावना पैदा करके राष्ट्रीय आंदोलन में अविस्मरणीय योगदान दिया।

गतिविधि : स्वामी विवेकानंद के भाषणों में युवाओं को प्रेरणा देने वाले विचारों का संकलन करके चर्चा करें।

5. सांस्कृतिक राष्ट्रीयता तथा महर्षि अरविंद एवं डॉ. हेडगेवार

भारत एक प्राचीन सांस्कृतिक राष्ट्र है। भारत की संस्कृति ही इसकी आत्मा है, जो सम्पूर्ण भारत को एकसूत्र में पिरोकर अखण्ड बनाए हुए है। भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के दो प्रमुख पैरोकार महर्षि अरविंद एवं डॉ. केशवराव हेडगेवार थे।

5.1 अरविंद घोष: राजनीति में अरविंद घोष केवल पांच वर्ष रहे। लेकिन उतने ही दिनों में उन्होंने सारे देश को जगाकर स्वतंत्रता संघर्ष के लिए तैयार कर दिया। 'असहयोग पद्धति' की शुरुआत उन्होंने ही की तथा 'पूर्ण स्वतंत्रता' का उद्‌घोष भी सर्वप्रथम उन्होंने ही किया। वे 1902 ई. में कांग्रेस के अहमदाबाद एवं 1904 ई. के मुंबई अधिवेशन में सम्मिलित हुए। 1905 ई. के बनारस अधिवेशन में लाला लाजपत राय के निष्क्रिय प्रतिरोध के कार्यक्रम से प्रभावित हुए तथा सक्रिय रूप से राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़े। 1905 ई. में बंग-भंग (बंगाल विभाजन) की घटना ने देश में राष्ट्रीयता की प्रबल लहर जागृत कर दी। उन्होंने 1906 ई. के कलकत्ता अधिवेशन में सक्रिय भाग लिया और स्वराज संबंधी प्रस्ताव को स्वीकृत करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। 1906 ई. में 'वंदे मातरम' पत्र के सह-संपादक के रूप में स्वदेशी एवं स्वराज की भावना का प्रचार अभियान

चित्र-6. अरविंद घोष लोकमान्य तिलक के साथ

©BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

शुरू किया। 1908 ई. में वे गिरफ्तार हुए। 1910 ई. में वे राजनीति से दूर हो गए तथा पांडिचेरी आश्रम में रहने लगे। अब वे अध्यात्म के मार्ग पर आगे बढ़ गए। 5 दिसंबर, 1950 ई. को पांडिचेरी में ही अरविंद घोष का देहांत हो गया। अरविन्द ने यह माना कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक है। उन्होंने माना कि स्वतंत्रता तीन प्रकार की होती है– राष्ट्रीय स्वतंत्रता यानि विदेशी नियन्त्रण से मुक्ति, आंतरिक स्वतंत्रता यानि किसी वर्ग अथवा वर्गों के सामूहिक नियंत्रण से मुक्ति तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता यानि व्यक्ति, समाज और शासन के अनावश्यक नियंत्रण से मुक्ति।

प्रमुख रचनाएं :

- दिव्य जीवन
- माता
- केन एवं अन्यान्य उपनिषद्
- सावित्री
- भारतीय संस्कृति के आधार
- ईशोपनिषद
- योग–समन्वय
- वेद–रहस्य
- गीता–प्रबंध

क) निष्क्रिय प्रतिरोध के समर्थक तथा स्वराज के पैरोकार : अरविंद घोष राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत गरम दल के विचारक थे तथा भारत की स्वाधीनता के प्रबल पक्षधर थे। उदारवादियों की ब्रिटिश न्यायप्रियता में निष्ठा उन्हें पसन्द नहीं थी। निष्क्रिय प्रतिरोध में उन्होंने स्वदेशी का प्रसार एवं विदेशी माल का बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा प्रसार एवं शिक्षण संस्थानों की स्थापना, सरकारी अदालतों व न्यायालयों का बहिष्कार तथा जनता द्वारा सरकार का असहयोग इत्यादि बातें सम्मिलित की। अरविंद घोष का मानना था कि भारतीयों का प्रथम लक्ष्य स्वराज की प्राप्ति होना चाहिए। सामाजिक सुधार एवं नैतिक उत्थान स्वराज में ही संभव हैं। अपने स्वराज की प्राप्ति हेतु अन्य राष्ट्रों के प्रति घृणा की बजाय अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं समर्पण भाव आवश्यक है।

स्वराज : स्वशासन या अपना राज्य

ख) तीन प्रकार के अधिकारों का समर्थन : अरविंद घोष ने तीन प्रकार के अधिकारों का समर्थन किया है प्रथम, प्रैस व अभिव्यक्ति का अधिकार अर्थात् हर व्यक्ति को अभिव्यक्ति का अधिकार प्राप्त होना चाहिए क्योंकि विचार का आकार लेने से पहले अभिव्यक्त होना आवश्यक है। किसी भी संस्था, प्रशासन या सरकार को चलाने में विचार भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दूसरा, सार्वजनिक सभा करने का अधिकार तथा तीसरा संगठन निर्माण का अधिकार। उनका मानना था कि एक स्वतंत्र राष्ट्र के लिए ये अधिकार आवश्यक हैं।

ग) अरविन्द घोष का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद : उन्होंने राष्ट्रीयता को आध्यात्म तथा मानवता से जोड़ा है। उन्होंने उदारवादियों की आलोचना कर क्रांतिकारी राष्ट्रीयता के द्वारा देशभर में एक उत्साह का संचार किया। उनका मानना है कि व्यक्ति कितने भी भिन्न हों परन्तु राष्ट्र प्रेम उन्हें एकता के सूत्र में बाँध देता है। वे कहते हैं कि 'राष्ट्रीयता ही राष्ट्र की दैवीय एकता है।' उनके राष्ट्रीय विचार उनके लेख 'वन्देमातरम्' में मिलते हैं। राष्ट्र के प्रति सम्मान, राष्ट्र गौरव या राष्ट्र की श्रेष्ठता का अभिमान राष्ट्रीयता है। राष्ट्रीयता मानवीय अस्तित्व का

©BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

आधार है। राष्ट्रीयता अपने आप में उच्चतम मूल्य बन जाता है। जिसके आगे व्यक्तिगत मूल्यों की भी महत्ता नहीं रह जाती है। यदि विचारधारा के रूप में मूल्यांकन करें तो राष्ट्रवाद, राष्ट्र और राष्ट्रीयता के प्रति समर्पित विचारधारा है।

महान राष्ट्रीय चिन्तक और विचारक महर्षि अरविन्द ने भारतीय आध्यात्मिक चेतना का जागरण किया। उनका मानना है कि "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, भारतीय आत्मा की अभिव्यक्ति है।" अरविन्द के अनुसार भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन राजनीतिक था परन्तु उसका मूल सनातन धर्म में निहित आध्यात्मिकता में समाहित था। अरविन्द घोष का मानना था कि "सनातन धर्म और भारत एक ही हैं, जो एक दूसरे से गहरे जुड़े हैं।" सनातन धर्म ने उस ताकत का निर्माण किया, 'जिसने भारत को गतिशील बनाया।' अपने भाषण में उन्होंने राष्ट्रीयता का परिचय देते हुए कहा था कि 'मैं अब कहता हूँ कि राष्ट्रीयता सनातन धर्म है।' अरविन्द घोष को भारत की शक्ति और भारतीयों के सामर्थ्य पर कोई शक नहीं था। उनका मानना था कि 'यह शक्ति और सामर्थ्य सुप्त है, उसे केवल जागृत करने की आवश्यकता है।'

Bande Mataram
Weekly Edition.
PUBLISHED EVERY SUNDAY.
Price One Anna. Price One Anna.
VOL. I. CALCUTTA, SUNDAY, SEPTEMBER 29, 1907. NO. 18.
OUR PICTURE GALLERY.

चित्र-7. 'वंदे मातरम' समाचार पत्र

5.2 डॉक्टर केशवराव बलिराम हेडगेवार : डॉक्टर केशवराव हेडगेवार बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय एवं क्रांतिकारी विचारों से ओत-प्रोत देशभक्त थे। एक बार जब वे स्कूल में ही पढ़ रहे थे तो उन्होंने अंग्रेज इंस्पेक्टर का स्वागत 'वंदे मातरम' जयघोष से किया, जिस पर अंग्रेज इंस्पेक्टर बिफर गया और उसके आदेश पर केशवराव को स्कूल से निकाल दिया गया। उन्होंने डॉक्टरी की पढ़ाई कलकत्ता से पूरी की। कलकत्ता में केशवराव अपने बड़े भाई महादेव के मित्र श्यामसुंदर चक्रवर्ती के घर रहते थे और उसी समय उनका मेल-मिलाप बंगाल के क्रांतिकारियों से हुआ और वे 'अनुशीलन' एवं 'युगांतर' जैसी क्रांतिकारी संस्थाओं से जुड़े। उनकी असाधारण योग्यता को देखते हुए उन्हें पहले 'अनुशीलन समिति' का साधारण सदस्य बनाया गया। उसके बाद जब वे कार्य कुशलता की कसौटी पर खरे उतरे तो उन्हें समिति का 'अंतरंग सदस्य' भी बना लिया गया। इस प्रकार डॉक्टरी की पढ़ाई करते समय क्रांतिकारियों की समस्त गतिविधियों का ज्ञान एवं संगठनतंत्र कलकत्ता से सीख कर वे नागपुर लौटे।

चित्र-8. डॉ. हेडगेवार पर जारी डाक टिकट

गतिविधि : 'अनुशीलन' एवं 'युगांतर' नामक क्रांतिकारी संस्थाओं पर एक निबंध लिखें।

प्रथम विश्व युद्ध शुरू हो चुका था। एक बात उनके ध्यान में आई कि सशस्त्र क्रांति के मार्ग की अपनी सीमाएं हैं और भारत जैसे विशाल देश से विदेशी शासन को उखाड़ फेंकना आसान नहीं है। केशवराव की लोकमान्य तिलक के विचारों में पूरी आस्था थी। वे उनके अनुयायी बन कर कांग्रेस के आंदोलन में कूद पड़े।

क) नागपुर कांग्रेस अधिवेशन : 1915 ई. से 1920 ई. तक नागपुर में रहते हुए केशवराव राष्ट्रीय आंदोलनों में अत्यंत सक्रिय रहे। वे प्रवास, सभा, बैठक आदि कार्यक्रमों में व्यस्त रहे तथा युवाओं को प्रेरित करने पर विशेष ध्यान दिया। नि:स्वार्थ भाव से काम करना, सहयोगियों को जोड़ना और हाथ में लिए काम के लिए अपने आपको झोंक देना जैसे गुण उनमें विद्यमान थे। 1920 ई. के नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में उनके गुणों का अनुभव सबको हुआ और मतभेदों के होते हुए भी संस्था के अनुशासन का पालन करने का उनका एक और अनुकरणीय गुण भी सबको देखने को मिला। अधिवेशन में आए 14000 प्रतिनिधियों की सुख-सुविधा और अन्य व्यवस्थाएं संभालने के लिए डॉ. परांजपे और डॉ. केशवराव हेडगेवार के नेतृत्व में एक 'स्वयंसवेक दल' का गठन किया गया। यह सारी जिम्मेदारी उन्होंने इतने अच्छे ढंग से निभाई कि वे सभी की प्रशंसा के पात्र बन गए। डॉ. केशवराव पूर्ण स्वतंत्रता के पक्षधर थे और अपनी यह बात बड़े आग्रह के साथ रखा करते थे। इसलिए उन्होंने अधिवेशन के दौरान प्रयत्नपूर्वक पूर्ण स्वतंत्रता संबंधी एक प्रस्ताव स्वागत समिति से पारित करवा कर विषय समिति के पास भिजवाया था कि हिंदुस्तान में लोकतंत्र की स्थापना कर विदेशी शासन के चंगुल से देश को मुक्त करवाना ही कांग्रेस का ध्येय हो किंतु यह प्रस्ताव पारित नहीं किया गया।

ख) असहयोग आंदोलन : लोकमान्य तिलक की मृत्यु के बाद भी डॉ. केशवराव कांग्रेस और हिंदू महासभा में काम करते रहे। वे कांग्रेस द्वारा 'खिलाफत आंदोलन' का साथ देने से खुश नहीं थे परंतु उन्होंने अपने सिद्धांत का पालन किया। मतभेदों के होते हुए भी कांग्रेस से जुड़े होने के कारण जब कांग्रेस ने 'असहयोग आंदोलन' की घोषणा की तो वे आंदोलन में कूद पड़े एवं उन्हें एक वर्ष की सश्रम कारावास की सजा हुई जिसे उन्होंने प्रसन्नता से काटा।

ग) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : 1922 ई. में भारत में कई स्थानों पर दंगे प्रारंभ हो गए। ऐसे में प्रमुख हिंदू महासभाई नेता डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे, डॉ. केशवराव हेडगेवार आदि इन स्थानों पर हिंदुओं की सहायता के लिए गए। ऐसी घटनाओं से विचलित होकर नागपुर में डॉ. मुंजे ने कुछ प्रसिद्ध हिंदू नेताओं की बैठक बुलाई जिनमें डॉक्टर हेडगेवार एवं डॉक्टर परांजपे भी थे। इस बैठक में उन्होंने एक हिंदू संगठन बनाने का निर्णय लिया, जिसका उद्देश्य था हिंदुस्तान को सशक्त राष्ट्र बनाना। इस संगठन को खड़ा करने की जिम्मेदारी डॉक्टर मुंजे ने डॉक्टर केशवराव बलीराम हेडगेवार को दी।

©BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

डॉ. हेडगेवार ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने व्यक्ति की क्षमताओं को उभारने के लिए नए-नए तरीके विकसित किए। हालांकि प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की असफल क्रांति और तत्कालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने एक हिन्दू संगठन की नींव रखी। इस प्रकार 28 सितंबर, 1925 ई. विजयदशमी दिवस को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को खड़ा करने के लिए सुबह शाम एक-एक घंटे की शाखाएं लगाई जाने लगी। इन शाखाओं में व्यायाम, शारीरिक श्रम, हिंदू राष्ट्रीयता की शिक्षा के साथ-साथ वरिष्ठ स्वयंसेवकों को सैनिक शिक्षा भी दी जानी तय हुई। स्वयंसेवकों की गोष्ठियाँ भी होती थी, जिनमें महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, गुरु गोविंद सिंह, बंदा बैरागी, वीर सावरकर, मंगल पांडे, ताँत्या टोपे की जीवनियाँ भी पढ़ी जाती थी।

घ) सविनय अवज्ञा आंदोलन : संघ कार्य के प्रारम्भ के बाद भी उनका कांग्रेस और क्रांतिकारियों के प्रति रुख सकारात्मक रहा। 1929 ई. में जब लाहौर में हुए कांग्रेसी अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पास किया गया और 26 जनवरी, 1930 ई. को देश भर में तिरंगा फहराने का आह्वान किया तो डॉ. केशवराव हेडगेवार के निर्देश पर सभी शाखाओं में 26 जनवरी, 1930 ई. को तिरंगा फहरा कर पूर्ण स्वराज प्राप्ति का संकल्प लिया गया। 1930 ई. में जब महात्मा गांधी द्वारा 'नमक कानून विरोधी आंदोलन' छेड़ा गया तो डॉक्टर केशवराव ने संघ प्रमुख की जिम्मेदारी डॉ. परांजपे को सौंप व्यक्तिगत रूप से अपने एक दर्जन सहयोगियों के साथ यवतमाल वन सत्याग्रह में भाग लिया जिसमें उन्हें 9 माह की कैद हुई। सन् 1935 ई.-1936 ई. तक संघ की शाखाएं केवल महाराष्ट्र तक ही सीमित थी और इसके स्वयंसेवकों की संख्या कुछ हजार तक ही थी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विस्तार योजना के अनुसार उनके नागपुर कार्यालय से बड़ी संख्या में युवक दो जोड़ी धोती एवं कुर्ता लेकर शाखाओं की स्थापना हेतु दिल्ली, लाहौर, पेशावर, क्वेटा, मद्रास, गुवाहाटी आदि विभिन्न शहरों में भेजे गए।

ड.) जाति प्रथा व अस्पृश्यता का विरोध : डॉ. हेडगेवार ने हिंदू समाज में व्याप्त जाति प्रथा, अस्पृश्यता एवं खण्डित मानसिकता को सामाजिक एवं राष्ट्रीय अवनति का मूल कारण माना। वे समग्रतावादी थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शिविरों में ब्राह्मणों, गैर-ब्राह्मणों एवं अस्पृश्यों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता था। वे एक साथ खेलते, खाते एवं ध्वज प्रणाम करते थे। 1934 ई. में महात्मा गांधी ने वर्धा तथा 1938 ई. में डॉ. अम्बेडकर ने पूना के संघ शिविर को देखने के बाद स्वयंसेवकों में समानता का भाव देखकर आश्चर्य प्रकट किया। दोनों ने इस कार्य के लिए संघ की प्रशंसा की।

डॉ. हेडगेवार को 1937 ई. एवं 1939 ई. में अखिल भारतीय हिंदू महासभा के 'राष्ट्रीय उपसभापति' के रूप में चुना गया था। इस तरह डॉ. हेडगेवार के कुशल निर्देशन, हिंदू महासभा के सहयोग एवं नागपुर में भेजे गए प्रचारकों के अथक परिश्रम व तपस्या के कारण संघ का विस्तार होता गया। उन्होंने अपने उत्तरदायित्व माधव सदाशिवराव गोलवलकर को सौंपने आरम्भ कर दिए, जो बाद में संघ के 'सरसंघचालक' बने।

©BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

डॉ. हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में कार्य संस्कृति की शुरुआत की, जैसे भगवा ध्वज के प्रति आस्था, व्यक्तियों के बजाय उनके विचारों को प्राथमिकता, पूर्णकालिक समर्पित स्वयंसेवक और दैनिक शाखा। उनकी दूरदर्शिता और क्षमता को यहां से भी सत्यापित किया जा सकता है कि 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आज दुनिया का सबसे बड़ा सामाजिक स्वयंसेवी संगठन (बिना किसी सरकारी सहायता के चलने वाला) माना जाता है।'

6. जाति प्रथा विरोध तथा अछूतोद्धार आंदोलन (वंचित जातियों का उद्धार)

जाति प्रथा भारतीय समाज की एक बुरी प्रथा रही है। इस प्रथा ने समाज में कई दोषों को जन्म दिया। इससे भेदभाव व वैमनस्य फैला और सामाजिक एकता छिन्न-भिन्न हो गई। भारतीय समाज का एक बहुसंख्यक भाग दरिद्र, अशिक्षित, वंचित एवं पिछड़ा हुआ रह गया, जिसका अर्थ था पूरे राष्ट्र का पिछड़ापन और सम्पूर्ण राष्ट्र की कमजोरी। उन्नीसवीं शताब्दी में जाति प्रथा तथा सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध कई सुधारकों ने आवाज उठाई।

6.1 सत्य शोधक समाज एवं श्री नारायण धर्म परिपालन योगम : ज्योतिबा फुले पहले प्रमुख समाज सुधारक थे जिन्होंने सत्यशोधक समाज की स्थापना करके जाति प्रथा पर घातक प्रहार किया। उन्होंने तत्कालीन समय में भारतीयों को आह्वान किया कि वे देश, समाज, संस्कृति को सामाजिक बुराइयों तथा अशिक्षा से मुक्त करके एक स्वस्थ, सुन्दर सुदृढ़ समाज का निर्माण करें। मनुष्य के लिए समाज सेवा से बढ़कर कोई सेवा नहीं। वे पढ़ने-लिखने को कुलीन लोगों की बपौती नहीं मानते थे। मानव-मानव के बीच का भेद उन्हें असहनीय लगता था। उन्होंने अपनी पत्नी सावित्री बाई फुले के साथ मिलकर स्त्री शिक्षा के लिए भी कई प्रयास किए। महात्मा फुले ने आजीवन सामाजिक सुधार हेतु कार्य किए। इसी प्रकार दक्षिण भारत में जातीय भेदभाव एवं छुआछूत का विरोध नारायण गुरु ने किया। उन्होंने केरल में श्री नारायण धर्म परिपालन योगम सभा का गठन करके जाति प्रथा को चुनौती दी। उन्होंने आह्वान किया था ''मानव मात्र के लिए एक धर्म, एक जाति और एक ईश्वर।'' उन्होंने वंचितों व अछूतों के उद्धार के लिए कई प्रयास किए तथा उन्होंने आह्वान किया कि सभी लोग अच्छी शिक्षा प्राप्त करें ताकि सभी को समान अवसर प्राप्त हो सकें। उन्होंने वंचित वर्ग के लोगों में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता पैदा की।

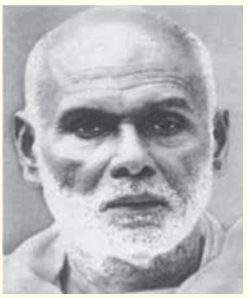

चित्र-9.
नारायण गुरु

6.2 डॉ. भीमराव अम्बेडकर की भूमिका : डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर एक बहुमुखी प्रतिभा वाले महान व्यक्ति थे। वे एक महान समाज सुधारक, विधिवेत्ता, राजनीतिज्ञ, कुशल वक्ता व उच्च कोटि के विद्वान थे।

प्रमुख रचनाएं :

1. शूद्र कौन थे।
2. अछूतों का उद्धार।
3. भाषायी प्रान्तों पर विचार।
4. प्रान्त एवं अल्पसंख्यक।

©BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

5. हिन्दू महिलाओं का उत्थान एवं पतन।
6. रुपए की समस्या: उद्भव और समाधान।
7. गांधी एवं गांधीवाद।
8. भारत में जाति।
9. संसदीय लोकतंत्र।
10. बुद्ध एवं उनका मत।
11. पाकिस्तान और विभाजन।
12. रानाड़े, गांधी और जिन्ना

उनका समूचा जीवन अन्याय, भेदभाव व शोषण से संघर्ष करते हुए बीता। वंचितों के प्रति किये गए उनके प्रयासों को देखते हुए उन्हे 'दलितों का मसीहा' कहा जाता है। डा. भीमराव अम्बेडकर ने 20वीं शताब्दी में जाति प्रथा एवं छुआछूत के विरोध में कई आंदोलन चलाए।

क) बहिष्कृत हितकारिणी सभा : डॉ. अम्बेडकर ने 20 जुलाई, 1924 ई. को अछूतों एवं दलितों की समस्याओं को दूर करने तथा उनमें सामाजिक, राजनीतिक चेतना जागृत करने के लिए मुंबई में बहिष्कृत हितकारिणी सभा का गठन किया। इस सभा के माध्यम से वे दलितों को शोषण के विरुद्ध संगठित करना चाहते थे उन्होंने आह्वान किया कि 'शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो'। सभा के मुख्य उद्देश्य थे:

- अछूतों एवं दलितों में शिक्षा का प्रसार।
- दलितों का सांस्कृतिक उत्थान।
- अछूतों एवं दलितों की समस्याओं का प्रतिनिधित्व।
- दलितों की आर्थिक दशा में सुधार।

अछूतों के उद्धार के लिए उन्होंने 'अखिल भारतीय दलित संघ' नामक संस्था भी बनाई।

ख) महाड़ का सत्याग्रह : डॉ. भीमराव अम्बेडकर की अगुवाई में 20 मार्च, 1927 ई. को महाराष्ट्र राज्य के रायगढ़ जिले के महाड़ स्थान पर दलितों को सार्वजनिक चवदार तालाब से पानी पीने और इस्तेमाल करने का अधिकार दिलाने के लिए किया गया एक प्रभावी सत्याग्रह हुआ। इस सत्याग्रह में हजारों की संख्या में दलित लोग सम्मिलित हुए थे, सभी लोग महाड़ के चवदार तालाब पहुँचे। दोपहर का समय था। सूर्य की किरणों का प्रतिबिंब तालाब के पानी में पड़ने लगा था। सर्वप्रथम डॉ. अम्बेडकर तालाब की सीढ़ियों से नीचे उतरे। नीचे झुककर अपनी एक अंगुली से पानी को स्पर्श किया। उसके बाद दोनों हाथों से उस तालाब का पानी पिया, फिर हजारों सत्याग्रहियों ने उनका अनुकरण किया। यह अम्बेडकर का पहला सत्याग्रह था। यही वह ऐतिहासिक पल था जिसने अस्पृश्य वर्ग में क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त किया। यह एक प्रतीकात्मक क्रिया थी जिसके द्वारा यह सिद्ध किया गया था कि हम भी मनुष्य है। हमें भी अन्य मनुष्यों के समान मानवीय अधिकार प्राप्त हैं।

चित्र-10. महाड़ सत्याग्रह

ग) असमानता एवं भेदभाव का विरोध : डॉ. अम्बेडकर समानता पर आधारित एक ऐसे समाज के समर्थक थे जिसमें जाति, भाषा, वर्ग, रंग, लिंग, नस्ल व जन्म स्थान आदि के आधार पर किसी के साथ कोई

©BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

भेदभाव न हो। अम्बेडकर ने प्राचीन समय में भारत में प्रचलित वर्ण व्यवस[redacted]

घ) संविधान निर्माण में भूमिका : डॉ. अम्बेडकर को भारतीय 'संविधान का निर्माता' होने का श्रेय प्राप्त है। 2 वर्ष, 11 महीने तथा 18 दिन के श्रम के उपरान्त 26 नवम्बर, 1949 ई. को भारत के संविधान का मसौदा तैयार हुआ। इसे तैयार करने में डॉ. अम्बेडकर की अग्रणी भूमिका रही। इस संविधान को 26 जनवरी, 1950 ई. को लागू किया गया। उन्होंने नए संविधान में अनेक ऐसी व्यवस्थाएं की जिनसे निम्न वर्गों, महिलाओं व पिछड़े वर्गों के हितों की रक्षा हो सके। संविधान के अनुछेद 17 के अन्तर्गत छुआछूत पर प्रतिबंध लगाकर अम्बेडकर ने भारतीय समाज में सदियों से प्रचलित कुप्रथा का अंत कर दिया। यह विशेष रूप से हिन्दू समाज के लिए ऐतिहासिक एवं क्रान्तिकारी कदम था। स्वतंत्रता के पश्चात् कानून मंत्री के पद पर रहते हुए अम्बेडकर ने ''हिन्दू कोड बिल'' तैयार किया। इस बिल की प्रमुख बातें निम्नलिखित थी :

चित्र-11. डॉ. अम्बेडकर एवं डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

1. अंतर्जातीय विवाह की अनुमति।
2. हिन्दू महिलाओं को सम्पत्ति के पूर्ण अधिकार।
3. पिता की सम्पत्ति पर पुत्री का समान अधिकार।
4. तलाक सम्बन्धी नियम आदि।

डॉ. अम्बेडकर आजीवन वंचितों के उद्धार के लिए संघर्ष करते रहे। इस महान विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री एवं समाज सुधारक के अमूल्य योगदान को देखते हुए उन्हें ''भारत रत्न'' जैसा सर्वोच्च सम्मान दिया गया।

26 नवम्बर, 1949 ई. को तैयार संविधान को 26 जनवरी, 1950 ई. अर्थात् दो मास उपरांत लागू किया गया। ऐसा क्यों? जानने का प्रयत्न करें।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के समाज सुधारकों ने विभिन्न संगठनों, संस्थाओं एवं आंदोलनों से सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जन जागरण करके भारतीयों में आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न की। प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का गौरवगान करके आत्महीनता के भाव को समाप्त किया। इन सभी आंदोलनों, संस्थाओं, विचारों एवं कार्यों का प्रभाव भारत के राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ा, जैसे:

1. शिक्षा का विकास एवं प्रसार हुआ।
2. नारी शिक्षा का विस्तार हुआ।
3. कुरीतियों की समाप्ति हुई।
4. नारी की दशा में सुधार हुआ।
5. कर्मकांड व अंधविश्वासों में कमी आई।
6. जाति प्रथा में कमी आई।

©BSEH, Bhiwani Not to be Republished

7. छुआछूत की समाप्ति हुई।
8. आत्मविश्वास एवं स्वाभिमान को बल मिला।
9. धर्मान्तरण में कमी आई।
10. राजनीतिक चेतना का प्रसार हुआ।
11. राष्ट्रीय एकता व अखंडता को प्रेरणा मिली।
12. स्वाधीनता संघर्ष को प्रेरणा मिली।

इस प्रकार स्पष्ट है कि 19वीं और 20वीं शताब्दी के समाज सुधार आंदोलनों ने भारत का सामाजिक एवं सांस्कृतिक जागरण करके राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष को प्रेरणा दी। इन समाज सुधार आंदोलनों का आधुनिक भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। इनसे जुड़े हुए महापुरुष व उनके संघर्ष को आज भी भारतीय जनमानस को आंदोलित और प्रेरित कर रहे हैं।

तिथिक्रम

1. ब्रह्म समाज की स्थापना ..... 1828 ई.
2. सती प्रथा पर रोक ..... 1829 ई.
3. विधवा पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता ..... 1856 ई.
4. प्रार्थना समाज की स्थापना ..... 1867 ई.
5. आर्य समाज की स्थापना .....1875 ई.
6. स्वामी दयानन्द का रेवाड़ी आगमन ..... 1880 ई.
7. शिकागो धर्म संसद का आयोजन ..... 1893 ई.
8. रामकृष्ण मिशन की स्थापना ..... 1897 ई.
9. बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना ..... 1924 ई.
10. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना ..... 1925 ई.
11. महाड़ सत्याग्रह हुआ ..... 1927 ई.

©BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

1 फिर से जानें :

1. राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना 20 अगस्त, 1928 ई. को की।
2. स्वामी दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना 1875 ई. में मुम्बई में की।
3. विरजानंद, स्वामी दयानन्द सरस्वती के गुरु थे।
4. 'विश्व धर्म सम्मेलन' अमेरिका के शिकागो शहर में 11 सितम्बर, 1893 ई. में हुआ।
5. महर्षि अरविंद घोष 1908 ई. में गिरफ्तार हुए।
6. डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार का सम्बन्ध दो क्रांतिकारी संस्थाओं 'अनुशीलन' व 'युगांतर' से था।
7. डॉ. हेडगेवार को 'असहयोग आंदोलन' में सहभागिता के कारण एक वर्ष की सजा हुई।
8. डॉ. अम्बेडकर संविधान निर्माण की प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे।

2 मिलान कीजिए :

1.	राजा राममोहन राय	(क)	पाण्डिचेरी
2.	स्वामी दयानंद	(ख)	महाड़
3.	डा. केशवराव बलिराम हेडगेवार	(ग)	नागपुर
4.	महर्षि अरविंद घोष	(घ)	सत्यार्थ प्रकाश
5.	डा. भीमराव रामजी अम्बेडकर	(ड़)	संवाद कौमुदी

3 आइये विचार करें :

1. राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज के द्वारा किन सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध अभियान चलाया? विस्तार से चर्चा करें।
2. आर्य समाज के शुद्धि आंदोलन पर चर्चा करें।
3. महर्षि अरविंद की सांस्कृतिक राष्ट्रीयता पर विचार करें।
4. नारायण गुरु एवं डॉ. अम्बेडकर के अछूतों व वंचितों के उद्धार के प्रयासों पर चर्चा करें।

©BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted

5. डॉ. हेडगेवार के भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण में योगदान पर चर्चा करें।
6. स्वामी विवेकानंद के विचारों का युवाओं पर क्या असर पड़ा?
7. प्रार्थना समाज के योगदान पर चर्चा करें ।

4 आओ करके देखें :

1. अपने आस-पास स्थित किसी बस्ती में जाकर सामाजिक विषमता एवं जातिगत भेदभावों पर चर्चा कर एक लेख लिखें।
2. पाठ में उल्लेखित राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के पुरोधाओं की वर्तमान में चल रही संस्थाओं से जुड़े व्यक्तियों से भेंट कर उस संस्था की वर्तमान जानकारी एकत्रित करें।

©BSEH, Bhiwani Not to be Reprinted